विद्याभवन, बालिका विद्यापीठ , लखीसराय

विषय- हिंदी ***दिनांक- 24/05/2020***
वर्ग-पंचम ***वर्ग-शिक्षिका— नीतू कुमारी***

पाठ-2 (दादी माँ का पत्र)

सुप्रभात बच्चों,

आज आपको दादी माँ का पत्र लिखने के माध्यम से लेखिका ने आज़ादी से पहले भारत में घटी , उस समय स्त्रियों के पति समाज में रूढ़िवादी विचार व्याप्त थे जिन्हें स्वाधीनता आंदोलन चुनौती दे रहा था। स्त्रियाँ धीरे-धीरे परिवार की सीमा के बाहर निकलकर पुरुषों के साथ मिलकर काम करने लग गयीं थी।

मेरी प्यारी पोती प्रेमा,

मैं अपनी प्रसन्नता नहीं व्यक्त कर सकती। तुम परीक्षा में उत्तीर्ण ही नहीं हुई, बल्कि तुमने अच्छे अंक भी प्राप्त किए। इससे पता चलता है कि तुम गम्भीरतापूर्वक अध्ययन कर रही हो। यह प्रसन्नता की बात है कि पढ़ाई में तुम्हारा मन लग रहा है।

मुझे सदा विश्वास रहा है की तुम जो भी निश्चय करोगी,उसे अवश्य पूरा करोगी। तुममें यह योग्यता है।तुम्हारी इच्छा शक्ति प्रबल है। तुम जो कुछ ठान लोगी, उसे तो पूरा कर ही लोगी। यदि ग़लती हो जाती है तो कुछ लोग परिस्थितियों को दोष देते है। परंतु सच ये है कि ये परिस्थितियाँ लोगों द्वारा ख़ुद बनायी गयी होती है।

जब मैं कॉलेज की पढ़ाई समाप्त कर चुकी थी। तभी मेरी सगाई कर दी गई। उस समय का यही प्रचलन था। मेरा विवाह एक वर्ष बाद होना तय हुआ। मेरी इच्छा थी कि मैं इस बीच मनोनुकूल कार्य करूँ। इस प्रकार समय का सदुपयोग होगा। मेरी माँ चाहती थी की मैं घर पर रहूँ और खाना बनना,सिलाई - कढ़ाई आदि सीखूँ। विवाह के पूर्व इनको सीख लेना अनिवार्य था। परंतु मेरे मन में कुछ और ही था। मैं कुछ रोमांचक और चुनौतिपूर्ण कार्य करना चाहती थी। मैं कुछ ऐसा कार्य करना चाहती थी जो मुझे घर की चहारदीवारी से बाहर जाने का अवसर देती।

मैं चार भाइयों में अकेली बहन थी। मैं व्यवहार में भेदभाव सहन नहीं कर सकती थी। मुझे पता चला कि शहर के एक बालिका विद्यालय में शिक्षिकाओं की आवश्यकता है। डरते-डरते मैंने पिताजी से वहाँ नौकरी करने की इच्छा प्रकट की। पिताजी ने मुझे सहर्ष स्वीकृति दे दी। मेरी ख़ुशी का ठिकाना न रहा।

आज के लिए इतना ही, शेष अगली कक्षा में।

गृहकार्य :—

बच्चों दी गयी अध्ययन-सामग्री को पूरे मनोयोग से पढ़ें तथा वर्ग-कार्य कॉपी में शुद्ध-शुद्ध और सुंदर अक्षरों में लिखें।